केन्सीय अर्थशास्त्र एवं विकासशील देश

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (Historical Context)

- **प्रकाशन:** लॉर्ड केन्स की प्रसिद्ध पुस्तक

  "General Theory of Employment, Interest and Money" (1936)

  ने आधुनिक आर्थिक विचारधारा को बदल दिया।

- **उद्देश्य:** 1930 की महान मंदी (Great Depression) का समाधान करना।

- **क्रांति:** इसे 'नवीन अर्थशास्त्र' कहा गया क्योंकि इसने पुरानी क्लासिकल (शास्त्रीय) मान्यताओं (जैसे 'अहस्तक्षेप नीति') को चुनौती दी।

केन्सीय सिद्धांत अल्पविकसित देशों में लागू क्यों नहीं होते?

केन्स का सिद्धांत मुख्य रूप से **विकसित औद्योगिक देशों** के लिए था। विकासशील देशों में यह निम्नलिखित कारणों से पूरी तरह फिट नहीं बैठता:

बिंदु	केन्सीय मान्यता (विकसित देश)	विकासशील देशों की स्थिति
बेरोजगारी का स्वरूप	चक्रीय बेरोजगारी (माँग की कमी से)।	अदृश्य एवं प्रच्छन्न बेरोजगारी (साधनों की कमी से)।
अर्थव्यवस्था	बंद अर्थव्यवस्था (विदेशी व्यापार गौण)।	खुली अर्थव्यवस्था (विदेशी व्यापार पर निर्भरता)।
विश्लेषण काल	अल्पकालीन (Short-term)।	दीर्घकालीन विकास (Long-term growth) की समस्या।
साधन	श्रम और पूँजी दोनों बेरोजगार होते हैं।	श्रम अधिक है, पर पूँजी का भारी अभाव है।
मुख्य समस्या	प्रभावपूर्ण माँग की कमी।	उत्पादन एवं पूर्ति (Supply) की कमी।

केन्सीय उपकरणों (Tools) की सीमाएँ

विकासशील देशों के संदर्भ में केन्स के प्रमुख औजारों की प्रभावशीलता कम रहती है:

1. **प्रभावपूर्ण माँग:** यहाँ माँग बढ़ाने से रोजगार नहीं बढ़ता, बल्कि **महंगाई (कीमतें)** बढ़ जाती है क्योंकि उत्पादन करने के लिए मशीनें और तकनीक (पूँजी) नहीं होतीं।
2. **गुणक (Multiplier):** विकासशील देशों में गुणक काम नहीं करता क्योंकि पूर्ति की लोच कम होती है और यहाँ अनैच्छिक बेरोजगारी के बजाय **प्रच्छन्न बेरोजगारी** अधिक है।
3. **उपभोग प्रवृत्ति (MPC):** यहाँ उपभोग की सीमांत प्रवृत्ति बहुत ऊँची होती है। आय बढ़ते ही लोग खर्च करने लगते हैं, जिससे वस्तुओं की कमी हो जाती है और कीमतें बढ़ती हैं।
4. **बचत:** केन्स बचत को बुराई मानते थे, लेकिन विकासशील देशों के लिए **बचत एक गुण** है क्योंकि इसी से पूँजी निर्माण होता है।
5. **निवेश:** यहाँ 'पूँजी की सीमांत दक्षता' (MEC) कम होती है क्योंकि बुनियादी सुविधाओं (सड़क, बिजली, बैंक) का अभाव है।

विकासशील देशों में केन्स की सार्थकता (महत्व)

भले ही पूरे सिद्धांत लागू न हों, लेकिन केन्स के कुछ सुझाव आज भी विकासशील देशों के लिए "संजीवनी" की तरह हैं:

- **राज्य की सक्रिय भूमिका:** विकासशील देशों में बिना सरकारी हस्तक्षेप के नियोजित विकास संभव नहीं है। (क्लासिकली अहस्तक्षेप नीति यहाँ विफल है)।
- **सार्वजनिक निर्माण कार्य:** सरकार द्वारा सड़क, रेल, बाँध और अस्पताल बनाने से बुनियादी ढांचा मजबूत होता है।
- **राजकोषीय एवं मौद्रिक नीति:** घाटे की वित्त व्यवस्था (Deficit Financing) और सस्ती ब्याज दरों का उपयोग विकासशील देश निवेश बढ़ाने के लिए करते हैं।

निष्कर्ष (डॉ. वी. के. आर. वी. राव का मत)

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री डॉ. राव के अनुसार, केन्स के 'घाटे के बजट' वाले उपाय विकसित देशों की मंदी तो ठीक कर सकते हैं, लेकिन विकासशील देशों को ***संरचनात्मक सुधारों (Structural Reforms)*** की अधिक आवश्यकता है।

याद रखने योग्य सूत्र:

विकासशील देशों में समस्या 'माँग' की नहीं, बल्कि 'उत्पादन की क्षमता' और 'पूँजी' के अभाव की है।